ओम जय जगदीश हरे

www.BhajanSandhya.com

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॥ओम..॥

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॥ओम..॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी॥ ॥ओम..॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ॥ओम..॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता,
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॥ओम..॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॥ओम..॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ बढाओ, द्वार पडा तेरे॥ ॥ओम..॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
(**Or** - दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे)
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥ ॥ओम..॥

तन मन धन, सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा॥ ॥ओम..॥
